विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 15 : नई दिल्ली : 6-12 जुलाई 2018

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक चेन्नई में पधार गए हैं। आचार्यप्रवर के पदार्पण से चेन्नईवासियों के उल्लास, उत्साह और उमंग मानों चरम को छूने लगे हैं। पूज्यप्रवर ने चेन्नई महानगर की उपनगरीय यात्रा प्रारम्भ कर दी है। आगामी २१ जुलाई को पूज्यप्रवर 'माधावरम्' में भव्य मंगल चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। चेन्नई के कार्यकर्ता चतुर्मास-प्रवास की व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने में सोत्साह निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

अहिंसा धर्म और परकल्याण की साधना करें

२८ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः दोरावरी सत्रम् से सुल्लुरपेट की ओर प्रस्थित हुए। आज आसमान मेघाच्छन्न था और मंद-मंद हवा बह रही थी। इस कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। चेन्नई की निकटता के साथ प्रतिदिन श्रद्धालुओं की भीड़ भी बढ़ती जा रही थी। बताया गया कि 'नेलापट्टू बर्ड सेन्चुरी' भी परिपार्श्व में ही स्थित है। करीब ४५८.६२ हेक्टेयर में विस्तीर्ण इस स्थान में पक्षियों की करीब १८६ प्रजातियों को संरक्षित, विकसित और पोषित किया जाता है। पूज्यप्रवर करीब १३.५ कि.मी. का विहार कर सुल्लुरपेट में स्थित गोकुल कृष्णा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में पधारे। आचार्यप्रवर का आज का प्रवास कॉलेज परिसर के फार्मेसी विभाग के भवन में हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'सत्संगति से आदमी में ज्ञान प्रस्फुटित हो सकता है। उससे बुरी आदतें भी छूट सकती हैं। हमारे जीवन में परोपकार का बहुत महत्त्व होता है। पतित को पावन, पापी को धार्मिक, अव्रती को व्रती, भोगी को त्यागी बना देना कितना बड़ा उपकार होता है। किसी भी आत्मा को भवसागर से पार उतरने में सहयोग देना परम उपकार होता है। हम स्वयं अपनी साधना करें और दूसरों के कल्याण में भी योगभूत बनने का यथासंभव प्रयास करें, ताकि उन्हें परम मंजिल प्राप्त हो सके।

किसी अज्ञानी को धर्म का ज्ञान देना, ज्ञानदान है। शुद्ध साधु को शुद्ध दान देना, संयतिदान होता है। छह काय के जीवों की हिंसा का त्याग कर देना अभयदान है। आदमी परोपकार करे, परकल्याण करे। किसी का उद्धार करने का प्रयास करे, यह काम्य है। परोपकार करना पुण्यबंध का कारण और दूसरों को पीड़ा पहुंचाना पापबंध का एक कारण होता है। व्यक्ति को अपनी ओर से दूसरों को पीड़ा पहुंचाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अहिंसा धर्म और परकल्याण धर्म की आराधना करें, यह अभिलषणीय है।'

कोई मनोबली ही सह सकता है

आज परमाराध्य आचार्यप्रवर के मुखारविंद का लुंचन हुआ। मध्याह्न में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदना कर लुंचन की निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना की तो आचार्यप्रवर ने उन्हें आधा-आधा घंटा का आगम स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने साध्वियों से पूछा--'सबके सुखसाता है ना?

साध्वीवृंद--'तहत् गुरुदेव।'

आचार्यप्रवर--'कोई कठिनाई तो नहीं है ना?'
साध्वीवृंद--'गुरुदेव की कृपा से कोई कठिनाई नहीं है।'
आचार्यप्रवर प्रेरणा प्रदान करते हुए--'गर्मी आदि को समभाव से सहन करने से कर्म निर्जरा होती है, इसलिए हर स्थिति में समभाव रहना चाहिए। पूज्यप्रवर ने दसवेआलियं का एक श्लोक फरमाया--

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं, सीउण्हं अरई भयं।
अहियासे अव्वहिओ, देहे दुक्खं महाफलं।।

क्षुधा, प्यास, दुःशय्या, शीत, उष्ण, अरति और भय को अव्यथित चित्त से सहन करे। क्योंकि देह में उत्पन्न कष्ट को सहना करना महाफल का हेतु होता है।
साध्वीवृंद--'तहत् गुरुदेव। कृपा कराई।'
साध्वीप्रमुखाजी--'आचार्यप्रवर के जीवन से सबको प्रेरणा मिलती है कि गुरुदेव कितनी गर्मी सहन करते हैं और भी आचार्यप्रवर कितनी-कितनी स्थितियों को सहन करते हैं। इस प्रकार कोई मनोबली व्यक्ति ही सहन कर सकता है।'

साध्वीप्रमुखाजी ने आगे निवेदन किया--'आचार्यप्रवर की छत्रछाया में इस वर्ष की इतनी लम्बी यात्रा सुखै-सुखै पूरी होने वाली है। कोलकाता से चले, तब चार अंकों (करीब २८०० कि.मी.) की यात्रा सामने थी। अब वह मात्र दो अंकों की रह गई।'

सायंकालीन गुरुवंदना के समय मुनिवृंद ने भी पूज्यप्रवर को सविधि वन्दन कर लुंचन की निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना की तो आचार्यप्रवर ने उन्हें भी आधा-आधा घंटा आगम स्वाध्याय की प्रेरणा प्रदान की।

आज के प्रवास स्थल से श्रीहरिकोटा करीब २८ कि.मी. दूर स्थित था। श्रीहरिकोटा आंध्रप्रदेश के तट पर बसा एक द्वीप है। जहां भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केन्द्र 'सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र' स्थापित है। इस केन्द्र से रॉकेट आदि के माध्यम से उपग्रहों का प्रक्षेपण किया जाता है।

मनुष्यों का शत्रु है गुस्सा

२६ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः सुल्लुरपेट से अक्कमपेटा के लिए प्रस्थान किया। गत चतुर्मास 'पल्लावरम्' में करने वाले मुनि अमृतकुमारजी और मुनि नरेशकुमारजी ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर श्री किशनलाल खाब्या के अनुरोध पर उनके द्वारा संचालित गौशाला में पधारे और उसका अवलोकन किया। वहां हुए संक्षिप्त कार्यक्रम में ऑल इंडिया स्थानकवासी समाज के उपाध्यक्ष श्री मोहनलाल चोरड़िया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रस्तुति दी। पूज्यप्रवर करीब ११.५ कि.मी. का विहार कर अक्कमपेटा में स्थित बहत्तर जिनालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। बहत्तर जिनालय के कन्वेनर श्री प्रवीण भाई मेहता, वाइस कन्वेनर श्री मल्लिकुमारजी, सचिव श्री मनोहरमल गेलड़ा, सहचेयरमेन श्री ताराचंदजी आदि ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधु जीवन में उपशम का भाव जितना अच्छा रहता है, साधुता उतनी ही अच्छी रहती है। सन्त वह होता है, जो शांत है। जिसे बात-बात में गुस्सा सताता रहता है, वह संत नहीं होता अथवा उसकी संतता में कमी होती है। प्रतिकूल स्थितियों में भी साधु गुस्सा न करे। ऋषि महान प्रसाद-प्रसन्नता वाले होते हैं, उन्हें गुस्से में तत्पर नहीं होना चाहिए। साधु को न केवल गुस्से से अपितु अहंकार, माया और लोभ से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। छद्मस्थ अवस्था में कषाय उत्तेजित हो सकता है, किन्तु साधु को वहां से लौट जाना चाहिए। उसे अपनी आत्मा

में रमण करना चाहिए। अपने घर में रहना प्रशस्त होता है। जो अपने घर में रहता है, वह निश्चिंत रह सकता है।

आदमी में यह कमजोरी होती है कि वह प्रतिकूल परिस्थिति में गुस्से में आ जाता है। कोई कमजोरी बताए तो आदमी को यह सोचना चाहिए कि मुझमें ये कमजोरिया हैं क्या? अगर इसकी बात सही है तो मैं गुस्सा क्यों करूं, कमजोरियों को सुधारने का प्रयास करूं और अगर यह झूठ बोल रहा है तो मैं फालतू बात पर क्यों गुस्सा करूं। कमजोरियां हैं तो सुधार लूं और कमजोरियां नहीं हैं तो फालतू बातों पर गुस्सा क्यों करूं। यह सोचकर किसी के द्वारा कुछ कहे जाने पर भी गुस्सा नहीं करना चाहिए।

'कोपः शत्रुर्मनुष्याणां' गुस्सा मनुष्यों का शत्रु होता है। वह आदमी को मन से भी दुःखी बना देता है और गुस्से का असर तन पर भी हो सकता है। इसलिए मनुष्य को मूलतः आत्मा की रक्षा के लिए असहिष्णुता और गुस्से से बचने का प्रयास करना चाहिए। प्रतिकार शांति के साथ भी किया जा सकता है, उसके लिए आदमी को गुस्सा क्यों करना चाहिए। उपशम के द्वारा गुस्से का नाश करने का प्रयत्न करना चाहिए। जिसे ज्यादा गुस्सा आए उसे दीर्घश्वास के साथ 'उवसमेण हणे कोहं' का मानसिक जप करना चाहिए। यह गुस्से को कम करने का एक उपाय है।

जिनेश्वर देव तो गुस्से से पूर्णतया मुक्त होते हैं। अतीत में उत्सर्पिणि काल में चौबीसी हो गई, वर्तमान अवसर्पिणि काल में चौबीस तीर्थंकर हो गए और आगामी उत्सर्पिणि काल में चौबीस तीर्थंकर होने वाले हैं। जो अतीत में हो गए हैं और जो वर्तमान में हो गए हैं, उनको हमारा वंदन है, नमस्कार है। भावी तीर्थंकरों के प्रति मंगलकामना है कि वे विश्व को और जनता को खूब आलोक बांटें।

बहत्तर जिनालय के कन्वेनर श्री प्रवीणभाई मेहता ने कहा--'आज हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य का दिन है कि तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणकमल हमारे इस बहत्तर जिनालय में पड़े हैं। आज इस धाम में आपका पदार्पण हमारे लिए किसी उत्सव से कम नहीं है। आप अहिंसा यात्रा के द्वारा जनकल्याण का कार्य कर रहे हैं। इससे देश में ही नहीं, दुनिया में परिवर्तन आएगा।'

आज मध्याह्न में श्री प्रवीण मेहता ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने पूज्यप्रवर के समक्ष अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्त करते हुए कहा--'आचार्यश्री तुलसी जब मद्रास (चेन्नई) में पधारे थे, तब मैं चौबीस वर्ष का था। उस समय हमने उनको हमारे घर में पधारने का बहुत अनुरोध किया, किन्तु वह संभव नहीं हो पाया। आज इस स्थान पर पधारकर आपने मेरी आधी सदी पहले की भावना पूरी कर दी। आज मेरी खुशी का कोई पार नहीं है।'

भीतर है सुख का खजाना

३० जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः बहत्तर जिनालय से ताडा की ओर प्रस्थान किया। आकाश में बादल छाए हुए थे, इस कारण सूर्य अदृश्य था, किन्तु उमस के कारण शरीर पसीने से आर्द्र बन रहा था। पूज्यप्रवर लगभग ७.५ कि.मी. का विहार कर ताडा स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास हाइस्कूल परिसर में स्थित बॉयज् स्कूल में हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी बाहर में जीता है अथवा भीतर में? अध्यात्म के क्षेत्र में यह बड़ा प्रश्न है। हम भीतर में रहना सीखें। यह शरीर बाहर है, आत्मा भीतर है। यदि आदमी शरीर व पदार्थों के आसपास रहता है तो मानना चाहिए कि वह बाहर में जी रहा है। पदार्थों के प्रति ज्यादा आकर्षण न हो, शरीर का भी ज्यादा मोह न हो, ध्यान-स्वाध्याय में ज्यादा रुचि हो तो मानना चाहिए कि हम अपनी आत्मा के आसपास रहने लगे हैं।

अध्यात्म की साधना का सार है बाहर से भीतर में आना। भीतर में आना बहुत महत्त्वपूर्ण बात होती

है। यह सुख का मार्ग है। आत्मा के भीतर कितना कुछ है। उसे जान लिया जाए, समझ लिया जाए तो कितनी बड़ी उपलब्धि हो सकती है। भीतर में कितना खजाना भरा है। भीतर में रहने वाला कुछ विशेष प्राप्त कर सकता है।'

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों ने पूज्यप्रवर के समक्ष अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

तमिलनाडु सरकार द्वारा आचार्यप्रवर को 'स्पेशल गेस्ट' का सम्मान समर्पित'

तमिलनाडु सरकार ने परम पूज्य आचार्यप्रवर को अपने राज्य की यात्रा के संदर्भ में 'स्पेशल गेस्ट' का सम्मान अर्पित किया है। राज्य सरकार की ओर से ३० जून २०१८ को इस आशय का पत्र जारी करते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश जारी किए गए हैं। ज्ञातव्य है कि आचार्यप्रवर को राजकीय सम्मान अर्पित करने वाला तमिलनाडु देश का तेरहवां राज्य है।

तमिलनाडु में भव्य पावन प्रवेश, उमड़ा जन सैलाब

१ जुलाई। आषाढ़ कृष्णा तृतीया। तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का २२वां महाप्रयाण दिवस। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पश्चिम रात्रि में 'महाप्राण गुरुदेव' का आंशिक संगान किया।

आज परम पूज्य आचार्यप्रवर का तमिलनाडु राज्य में प्रवेश निर्धारित था, इस दृष्टि से तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों और विशेष रूप से चेन्नई के श्रद्धालु बड़ी संख्या में सूर्योदय के आसपास ही पूज्य सन्निधि में पहुंच गए। पूज्यप्रवर ने आंध्रप्रदेश के ताडा से तमिलनाडु के आरम्बक्कम् की ओर प्रस्थान किया। ज्यों-ज्यों पूज्यप्रवर तमिलनाडु की सीमा की ओर बढ़ते जा रहे थे, जन पारावार भी बढ़ता जा रहा था और बढ़ता जा रहा था जनता का उल्लास और उत्साह। बादल आज भी मानों पूज्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हो गए और सूर्य को अदृश्य बना दिया। हवा की न्यूनता की स्थिति उमस शरीर को पसीने से नहला रही थी।

पूज्यप्रवर करीब छह कि.मी. की यात्रा कर तमिलनाडु की सीमा के निकट पधारे। यहां तो जनता का मानों सैलाब उमड़ आया। हजारों लोग अपने राज्य में अपने आराध्य का स्वागत करने के लिए पलक-पांवड़े बिछाए खड़े थे। निर्धारित व्यवस्थानुसार श्रावक-श्राविकाओं के तमिलनाडु की सीमा में कतारबद्ध खड़े होकर पूज्यप्रवर का स्वागत करना था, किन्तु लोगों की भावना और उत्सुकता इतनी प्रबल थी कि वे अपने आराध्य के ज्यादा-ज्यादा निकट अवस्थित रहकर प्रवेश के दृश्य साक्षात् निकटता के साथ निहारना चाहते थे। इस कारण पूज्यप्रवर के आसपास काफी भीड़ एकत्रित हो गई। हालांकि काफी लोग तमिलनाडु की सीमा में खड़े थे, फिर भी सैंकड़ों लोग पूज्यप्रवर के इर्द-गिर्द ही अवस्थित थे। चारों ओर आस्था और आह्लाद का पारावार लहरा रहा था। भारी भीड़ को देखते हुए पूज्यप्रवर की सेवा में चलने वाले संतों को पूज्यप्रवर के आसपास सुरक्षा घेरा बनाना पड़ा।

पूज्यप्रवर ने करीब ८.२१ बजे तमिलनाडु की सीमा में ज्यों ही अपने चरण रखे, जयनिनादों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। करीब आधी सदी बाद अपने आराध्य को अपनी धरती पर देखकर लोगों का उल्लास चरम पर जा पहुंचा। उनके खिलते चेहरे उनकी आंतरिक हर्षोल्लास को अभिव्यक्ति दे रहे थे। पूज्य पदचिन्हों का अनुगमन करते हुए मुनिवृंद और तत्पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वीवृंद, समणीवृंद तमिलनाडु की सीमा में प्रविष्ट हुए।

पूज्यप्रवर ने अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान तमिलनाडु के रूप में हिन्दुस्तान के १४वें राज्य, आचार्य पदाभिषेक के बाद १६वें राज्य का स्पर्श किया। तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले में पूज्यप्रवर का पावन प्रवेश हुआ। तिरुवल्लूर के सांसद श्री वेणुगोपाल ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत करते हुए बोले--'आपका तमिलनाडु की धरती पर बहुत-बहुत स्वागत है। यहां की जनता को आप अपना आशीर्वाद प्रदान करें।'

पूज्यप्रवर करीब ११.५ कि.मी. का विहार आरम्बक्कम् स्थित सेंट मैरी मेट्रिक एच.आर. सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

बीसवीं सदी के विशिष्ट पुरुष थे आचार्य तुलसी

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में भी हजारों लोग उपस्थित थे। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'परम पूज्य आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के एक विशिष्ट पुरुष हुए थे। वे राजस्थान राज्य के नागौर जिले के लाडनूं में जन्मे। उन्हें परम पूज्य कालूगणी के दर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ। बालक तुलसी के मन में कोई आकर्षण हो गया। परम पूज्य कालूगणी के व्यक्तित्व ने मानों उस बालक को खींच लिया और उनमें साधु बनने का भाव जागृत हो गया। कालूगणी ने बालक तुलसी को मुनि दीक्षा देकर मुनि तुलसी बना दिया। करीब ग्यारह वर्षों तक मुनि तुलसी को परम पूज्य कालूगणी के साये में, सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुनि तुलसी के लिए वह ग्यारह वर्षों का समय विकास का अवसर था। उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग कर कितना-कितना ज्ञान कंठस्थ कर लिया था। हजारों गाथा प्रमाण साहित्य तो उन्होंने कंठस्थ कर लिया था। संस्कृत का भी अध्ययन किया।

परम पूज्य कालूगणी के स्वास्थ्य में कठिनाई पैदा हुई और विक्रम संवत् १९९३ के गंगापुर चतुर्मास के दौरान जब कालूगणी को यह लगने लगा कि अब शरीर ज्यादा टिकने वाला नहीं है तो उन्होंने मुनि तुलसी को याद किया, अपनी स्थिति बताई और भावी दायित्व का संकेत दे दिया। भाद्रव शुक्ला षष्ठी को सायंकाल कालूगणी ने मानों इस संसार को अलविदा कह दिया और इस नश्वर देह से मुक्त हो गए।

लगभग २२ वर्ष की अवस्था में एक युवा संत तुलसी पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के नेतृत्व का, अनुशासन का दायित्व आ गया। इतनी छोटी अवस्था में तेरापंथ के आचार्य पद पर आरूढ़ होना एक विशेष बात होती है। तेरापंथ के आचार्य पद पर वे औपचारिक रूप में भाद्रव शुक्ला नवमी को आरूढ़ हुए। भैक्षव शासन के अनुशासन की अमल धवल चद्दर को उन्होंने ओढ़ा। वह चद्दर मानों इस बात की प्रेरणा दे रही थी कि यह चद्दर जैसे धवलिमा युक्त है, वैसे ही आपका शासनकाल भी धवलिमा युक्त रहे। उन्होंने तेरापंथ का अधिनेतृत्व संभालने के बाद कुछ वर्षों तक ज्यादा लम्बी यात्राएं नहीं कीं। थोड़े से भूभाग में ही ज्यादा विचरण किया। मानों वह उनके निर्माण का समय था। फिर उन्होंने यात्रा शुरू की और विक्रम संवत् २००६ का चतुर्मास उन्होंने जयपुर में किया। उस चतुर्मास में दीक्षा के संदर्भ में उनका विरोध हुआ। गुरुदेव तुलसी के जीवन में मानों विरोध ने काफी साहचर्य निभाया।

फिर गुरुदेव तुलसी ने दिल्ली की यात्रा की और कुछ वर्षों बाद तो उन्होंने कोलकाता की भी यात्रा कर ली। हमारी आचार्य परंपरा में गुरुदेव तुलसी प्रथम आचार्य थे, जो कोलकाता और दक्षिण भारत में पधारे थे। उनसे पहले और किसी आचार्यप्रवर ने कोलकाता और दक्षिण भारत की यात्रा नहीं की थी। भारत के कितने-कितने प्रान्तों की यात्रा गुरुदेव तुलसी ने की।

उन्होंने जैन आगमों के संपादन का महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ किया। वह जैन शसन की या वाङ्मय जगत की सेवा का कार्य है, बहुत बड़ा कार्य है। बात विक्रम संवत् २०३६ की है। गुरुदेव तुलसी पंजाब की यात्रा में थे। संभवतः अहमदगढ़ मण्डी में विराजमान थे। प्रातःकाल का समय था। कुछ प्रबुद्ध लोग गुरुदेव के पास आए। उनके साथ वार्तालाप के दौरान आगम संपादन की बात चली। गुरुदेव तुलसी ने उनसे जो कहा, उसका संभवतः भाव यह था कि देखिए, हम लोग आगम संपादन का कार्य कर रहे हैं। यह बहुत विशाल कार्य है। यह इतना बड़ा कार्य है कि मेरे जीवनकाल में पूरा नहीं होगा। मेरे उत्तराधिकारी इस काम को करेंगे और फिर उनके उत्तराधिकारी भी इस कार्य को करेंगे। इस प्रकार आगम संपादन का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने प्रारंभ किया और उनके नेतृत्व में काफी कार्य हुआ भी। हमारे धर्मसंघ में आज भी आगम वाङ्मय के वाचना प्रमुखत्व

के रूप में गुरुदेव तुलसी का नाम प्रकाशित होता है। आगम बहुत ही ठोस साहित्य है, गरिमापूर्ण साहित्य है। श्रावक-श्राविकाएं भले प्राकृत भाषा को न पढ़ें, हिन्दी भाषा के माध्यम से आगमों के तथ्यों की जानकारी कर सकते हैं, आगम स्वाध्याय कर सकते हैं।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। मानव जाति के नैतिक उत्थान का कार्य हाथ में लिया। अणुव्रत व्यक्ति सुधार, समाज सुधार, राष्ट्र सुधार और विश्व सुधार का एक कार्य है। आदमी सदाचारी बने। वह उपासना करे, न करे अथवा किसकी करे, किसकी न करे यह अलग बात है, किन्तु सदाचार/नैतिकता तो सबके लिए उपयोगी हैं। एक नास्तिक व्यक्ति के लिए भी सदाचार व नैतिकता उपयोगी हैं। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत को आगे बढ़ाया और मुझे लगा कि अणुव्रत के प्रति उनके मन में अनुराग या निष्ठा का भाव था। उनके आचार्यकाल में प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का भी प्रारम्भ हुआ।

आचार्य महाप्रज्ञजी उनके उत्तराधिकारी थे। आचार्य तुलसी ने एक ऐसा कार्य किया, जो आज तक हमारे धर्मसंघ में केवल उन्होंने ने ही किया। वह कार्य था-आचार्य पद का विसर्जन। न तो उनसे पहले किसी ने किया और न ही अब तक किसी ने किया। सुजानगढ़ में आयोजित विक्रम संवत् २०५० के मर्यादा महोत्सव के दिन अर्थात् माघ शुक्ला सप्तमी को उन्होंने आचार्य पद के विसर्जन की घोषणा की और अपने युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित महाप्रज्ञजी को आचार्य घोषित कर दिया। सत्ता को छोड़ना कठिन हो सकता है। सत्ता का निस्वार्थ भाव से त्याग अपने आप में बड़ा त्याग हो जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ के लिए कितना-कितना कार्य किया। कितने-कितने साधु-साध्वियों का निर्माण किया, समणश्रेणी का प्रतिष्ठापन किया और कितने-कितने श्रावक-श्राविकाओं का निर्माण किया। कितने-कितने व्यक्तित्व उनके हाथों से निर्मित हुए थे। कितने-कितने मिट्टी के ढेले उनके हाथों से घड़े के रूप में सामने आए।

विक्रम संवत् २०५४ में गुरुदेव गंगाशहर में चतुर्मास के लिए पधारे। उन दिनों स्वास्थ्य में कुछ कठिनाई लग रही थी। कुछ प्राकृतिक चिकित्सा के रूप में भी उपचार चल रहा था। चिकित्सा, विश्राम एकान्त के लिए गुरुदेव तेरापंथ भवन से मूलचन्दजी बोथरा परिवार के मकान में पधारे और वहां कुछ दिन विराजमान हुए। उस समय आचार्य महाप्रज्ञजी तेरापंथ भवन में विराज रहे थे। चतुर्मास निकट था तो निर्णय हुआ कि गुरुदेव भी भवन में ही पधार जाएं।

आषाढ़ कृष्णा तृतीया का दिन गुरुदेव के तेरापंथ भवन में पधारने के लिए निर्णीत किया गया। मेरे पास कोई श्रावक आया और कहा कि गुरुदेव का तेरापंथ भवन में पधारने का जो समय तय किया गया है, वह थोड़ा अशुभ समय है। वह योग अच्छा नहीं है। मैं आचार्य महाप्रज्ञजी के पास गया और निवेदन किया कि एक श्रावक ने मुझे बताया है कि गुरुदेव का भवन पधारने का जो समय तय हुआ है, उस समय योग अशुभ है, इसलिए उसे परिवर्तित करना चाहिए। आचार्यश्री ने फरमाया कि तुम गुरुदेव को निवेदन कर दो कि प्रवेश के समय में थोड़ा परिवर्तन करना चाहते हैं। मैं संभवतः एक दिन पहले गुरुदेव तुलसी के पास गया और उन्हें निवेदन किया कि ज्योतिष की दृष्टि से समय में कुछ परिवर्तन अपेक्षित है। गुरुदेव ने समय को बदलने की स्वीकृति प्रदान कर दी। तदनुसार समय को परिवर्तित भी कर दिया गया।

प्रवेश के दिन मैं गुरुदेव की अगवानी में बोथराजी के मकान के अंदर तक चला गया। उस समय गुरुदेव पधार रहे थे। मैंने वंदन किया और निवेदन किया कि आप पैदल नहीं पधारकर साधन में विराजने की कृपा कराओ।' गुरुदेव ने फरमाया--नहीं, नहीं, ऐसे ही चलते हैं। गुरुदेव थोड़ी दूर पैदल पधारे, फिर साधन में विराज गए और कुछ दूरी के बाद फिर नीचे उतर गए। गुरुदेव ने तेरापंथ भवन में प्रवेश किया। उस समय आचार्य महाप्रज्ञजी भी अगवानी में पधार गए थे। भवन में पंडाल के सामने एक छोटा हॉल है, वहां गुरुदेव विराजे और वहां पांव आदि साफ करने का क्रम रहा। उसके बाद गुरुदेव अपने कक्ष में पधार गए। आचार्य महाप्रज्ञजी का

प्रवास स्थल दूसरी ओर था, आचार्यश्री वहां पधार गए। मैं गुरुदेव तुलसी के साथ गया। गुरुदेव वहां पोढ़ा गए। फिर फरमाया कि सूर्य के दो अयन होते हैं ना, अब कौन सा अयन आ रहा है। मैंने निवेदन किया--अब दक्षिणायन प्रारम्भ होने वाला है। फिर गुरुदेव ने फरमाया कि गंगाशहर के लोगों में कितनी श्रद्धा-भावना है। अभी प्रवेश हुआ, कितने लोग उमड़ गए। इस प्रकार कुछ वार्तालाप हुआ।

साध्वी जिनप्रभाजी उस समय आईं, वे मुझसे बात करना चाहती थीं तो मैंने गुरुदेव से निवेदन किया किया कि साध्वीजी आई हैं, तो मैं उनसे कुछ बात कर लूं? गुरुदेव ने फरमाया कि तुम इनसे बात कर लो। गुरुदेव के कमरे के बाहर सीढ़ियों के पास हवा का कुछ अवकाश था तो मैं वहां बैठ गया और साध्वीजी से बात करने लगा। कुछ ही समय बाद छोटे संत आए और बोले कि गुरुदेव के क्या हो गया। मैं तुरन्त अंदर गया तो मुझे गुरुदेव के शरीर की स्थिति विचित्र लगी। हमने 'उवसग्गहर स्तोत्र' आदि का पाठ शुरू किया और आचार्य महाप्रज्ञजी को पधारने के लिए तत्काल सूचना भिजवाई। आचार्यश्री वहां पधारे, तब तक तो गुरुदेव की बात करने की स्थिति ही नहीं रही। जोर से आवाज दी गई कि आचार्यश्री पधारे हैं, लेकिन गुरुदेव की ओर से कोई प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ। हमारे देखते-देखते गुरुदेव का चेहरा कैसा हो गया। डॉक्टर भी आए, पंपिंग कर हार्ट को ठीक करने का भी प्रयास किया गया। साध्वीप्रमुखाजी कुछ समय पहले ही अपने ठिकाणे की ओर पधारी थीं, सूचना मिलते ही पुनः पधार गईं। हमारा सारा प्रयास मानों अरण्यरोदन के समान व्यर्थ सिद्ध हुआ, हम गुरुदेव को बचा नहीं सके। बीकानेर वाले डॉ. मिश्रा आए, उन्होंने भी चेकअप किया और वे उदास हो गए, कुछ बोले नहीं। उनसे कहा गया कि डॉक्टर साहब बताइए क्या स्थिति है? उन्होंने उस समय जो कहा, उसका भाव इस प्रकार था--'आचार्य तुलसी संसार में नहीं रहे।' इस प्रकार आज के दिन वह घटना घटी और गुरुदेव तुलसी हमसे अलविदा हो गए। (इस घटना को बताने में यत्किंचित शब्दों और भावों का अंतर भी हो सकता है।)

एक विशिष्ट महापुरुष, जिन्होंने हमारे लिए, संघ के लिए, समाज के लिए, जैन शासन के लिए, मानवता के लिए कितना कुछ किया था। ऐसा महापुरुष को हम बार-बार श्रद्धार्पण करते हैं। उनके जीवन से हमें प्रेरणा मिलती रहे।'

तमिलनाडु में पदार्पण के संदर्भ में परम पावन आचार्यप्रवर ने कहा--'आज हम ससंघ तमिलनाडु में आए हैं। गुरुदेव तुलसी ने यहां यात्रा की थी। आज हमारा भी तमिलनाडु में आना हुआ, गुरुदेव ने तमिलनाडु के मद्रास (चेन्नई) चतुर्मास किया था। हम भी तमिलनाडु आए हैं और हमें भी चेन्नई में चतुर्मास करना है। तमिलनाडु में धर्म की खूब प्रभावना हो। मंगलकामना।'

पूज्यप्रवर के तमिलनाडु पदार्पण से हुई इतिहास की पुनरावृत्ति

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान पवित्र संकल्पों के माध्यम से जन-जीवन को पवित्र बना रहे हैं। ऐसे महापुरुष का करीब ५० वर्षों बाद तमिलनाडु की धरा पर पदार्पण हुआ है। लगभग आधी सदी पूर्व गुरुदेव तुलसी इस भूमि पर पधारे थे और आज आचार्यश्री के पदार्पण से इतिहास की पुनरावृत्ति हो गई है। पूज्यप्रवर पूर्वांचल की धरती को पावन करने के बाद दक्षिण भारत में प्रविष्ट हुए और आज तमिलनाडु की धरती पर पावन प्रवेश हुआ है। आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के संदेशों से यहां की जनता ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित हो।

आज गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण दिवस भी है। उनका व्यक्तित्व विराट था। उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण देन है-आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, आचार्यश्री महाश्रमणजी और साध्वीप्रमुखाजी। वर्तमान में हमें परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी का सान्निध्य प्राप्त है।' मुख्यमुनिश्री ने आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचित गीत 'पथदर्शक गुरुराज' का भी संगान किया।

तमिलनाडुवासियों को प्राप्त हुए दो महत्त्वपूर्ण अवसर

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज का दिन तमिलनाडुवासियों के लिए ऐतिहासिक है। दो महत्त्वपूर्ण अवसर उन्हें आज प्राप्त हुए हैं। एक ओर गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण दिवस और दूसरी ओर आचार्यश्री महाश्रमणजी का तमिलनाडु में प्रवेश। इतिहास स्वयं को दोहराता है। लगभग ५० वर्ष पहले आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत की यात्रा की और इसी आषाढ़ महीने में आंध्रप्रदेश से वे तमिलनाडु में प्रविष्ट हुए थे। आचार्यश्री महाश्रमणजी पश्चिम बंगाल के बाद झारखंड, ओड़िशा और आंध्रप्रदेश में परिभ्रमण करते-करते आज तमिलनाडु में पधारे हैं। मैं चार पंक्तियों में इस बात को कह रही हूं--

पांव-पांव चल महासूर्य यह तमिलनाडु भू पर आया,
जिस-जिस पथ से चला वहां आलोक अनूठा बरसाया।
कितने कदम चला जीवन में और चलेगा फिर कितने,
करें कामना चलता जाए नभ में हैं तारे जितने।।

तमिलनाडु के लोगों के लिए यह सौभाग्य की बात है कि आचार्यप्रवर महासूर्य के रूप में पधारे हैं। आचार्यप्रवर से जो आध्यात्मिक आलोक मिले, उससे सबको अपना जीवन आलोकित करना है।

आचार्यश्री तुलसी ने आचार्यश्री महाश्रमण का निर्माण किया। उनका जीवन विलक्षण था। उनके जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं घटित हुई, जिन्हें लोगों ने विस्मय के रूप में देखा। उनकी प्रतिभा को देखकर पूज्य कालूगणी ने दीक्षा के कुछ ही वर्षों के बाद उन्हें शैक्ष साधुओं के अध्यापन का काम सौंप दिया। सोलह वर्ष की अवस्था में वे नए संतों को पढ़ाने लग गए। बाईस वर्ष की युवावस्था में वे धर्मसंघ के आचार्य बन गए। उन्होंने इस दायित्व को गहरे आत्मविश्वास के साथ, निष्ठा के साथ निभाया। लोगों को आश्चर्य होने लगा कि इतनी छोटी अवस्था में आचार्य कैसे इतने बड़े निर्णय ले लेते हैं। अणुव्रत आंदोलन, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, जैन विश्व भारती, जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्व विद्यालय, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद आदि गुरुदेव तुलसी के युग के अवदान हैं।

उनका सबसे बड़ा मिशन था-व्यक्तित्व निर्माण। उन्होंने आचार्य बनते ही साध्वियों की शिक्षा शुरू कर दी। आज साध्वियों का जितना विकास है, उसमें पूज्य गुरुदेव तुलसी का श्रम है। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के उत्तराधिकारी अर्थात् आचार्यश्री महाश्रमणजी का निर्माण किया। केवल निर्माण ही नहीं किया, अपितु समाज को स्पष्ट संकेत भी दे दिया कि महाप्रज्ञजी के बाद संघ का भार ये संभालेंगे। उनका जीवन वास्तव में आश्चर्यों की वर्णमाला है। उसके बारे में मैं जितना भी वर्णन करूं, कम ही होगा। मेरे निर्माण में उनका कितना समय और श्रम लगा, मैं कुछ बता नहीं सकती।' (साध्वीप्रमुखाजी ने इस अवसर पर स्वरचित कविता भी प्रस्तुत की।) आज के इस अवसर पर गुरुदेव तुलसी के चरणों में हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और मंगलकामना करते हैं कि गुरुदेव के ही द्वारा निर्मित, प्रशिक्षित आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल अनुशासना में हमारा संघ उत्तरोत्तर विकास करता रहे। तमिलनाडु भी आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व और कर्तृत्व से और अधिक लाभान्वित हो।'

सपना-सा लगता है आचार्यप्रवर इतनी दूर पधार गए

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज आचार्यश्री महाश्रमणजी का तमिलनाडु की धरती पर मंगल प्रवेश हुआ है। जहां कहीं आपका पधारना होता है, लोगों को एक सपना-सा लगता है कि क्या आचार्यप्रवर सचमुच भूटान पधार गए? क्या सचमुच काठमाण्डो (नेपाल) पधार गए, क्या सचमुच असम, नागालैण्ड और मेघालय पधार गए? यह यथार्थ होते हुए भी मन में आश्चर्य से यह प्रश्न होता है कि आचार्यप्रवर इतनी दूर कैसे पधार गए। यात्रा के दौरान आचार्यप्रवर का नए-नए क्षेत्रों में पधारना हो रहा है और नए-नए लोगों से हमारा परिचय हो रहा है।

अभी कुछ दिन पहले हमने सायंकाल विहार किया। बालयोगी गुरुकुलम् में हमारा प्रवास था। वहां के केयरटेकर को जब यह बताया गया कि आचार्यश्री राजस्थान से चलकर यहां पधारे हैं और तमिलनाडु सहित दक्षिण भारत की यात्रा करेंगे। उसको अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि कोई व्यक्ति राजस्थान से पैदल चलता-चलता राजस्थान से तमिलनाडु की धरती पर पहुंच सकता है क्या? कुछ समय बाद उसी ने कहा कि हां, यह तभी संभव हो सकता है, जब कोई डिवाइन पावर हेल्प करता हो। मैंने भी यही सोचा कि जरूर आचार्यप्रवर के साथ कोई दिव्य बल कार्य कर रहा है, इसके साथ पूरे संघ का बल भी आचार्यप्रवर के साथ है और आचार्यप्रवर का आत्मबल भी आचार्यप्रवर के साथ है। जिनके कारण इतनी बड़ी दुष्कर यात्रा संभव हो पा रही है। आचार्यप्रवर तमिलनाडु में पहुंच चुके हैं। यहां के लोग हर्षित-पुलकित हैं। सचमुच वे व्यक्ति धन्य होते हैं जिन्हें गुरु का अनुग्रह व आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसीलिए तमिलनाडु के लोग कृतार्थता की अनुभूति कर रहे हैं।

आज हम परम पूज्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की पुण्यतिथि भी मना रहे हैं। उनका बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व विलक्षण था। उनके पास एक बार आने वाला व्यक्ति सदा-सदा के लिए उनका बन जाता। उनके व्यक्तित्व में दिव्यता थी। अपने कर्तृत्व के माध्यम से भी गुरुदेव ने किस प्रकार लोगों को अपनी ओर खींचा। उनका वक्तृत्व भी निराला था। अपने वक्तृत्व और संगीत से वे किस प्रकार पूरी परिषद को मुग्ध बना लेते थे। उनका नेतृत्व भी अद्भुत था। बाईस वर्ष की युवावस्था में उन्होंने संघ का दायित्व संभाला। उन्होंने किस प्रकार उसका निर्वहन किया। उन्होंने स्वयं का निर्माण किया और साधु-साध्वियों का भी निर्माण किया। साध्वियों के विकास में तो उनका अवदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आज गुरुदेव तुलसी हमारे सामने प्रत्यक्ष नहीं हैं। हम आचार्यप्रवर में ही गुरुदेव की छवि निहार रहे हैं। हम यही मंगलकामना करते हैं कि आचार्यप्रवर से हमें निरंतर मार्गदर्शन उपलब्ध होता रहे और हम अपनी साधना के क्षेत्र में आगे से आगे बढ़ते रहें।'

आचार्यश्री तुलसी की भांति अद्भुत है आचार्यश्री महाश्रमण का जीवन

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व आकर्षक था। उनके पास आते ही व्यक्ति चुम्बक की तरह उनसे आकर्षित हो जाता था। उनका सौन्दर्य अद्भुत था। उनके जीवन में साहस था। उसी के आधार पर उन्होंने संघ के विकास के लिए विरोधों को हंसते-हंसते झेला। वे दूरदर्शी व्यक्तित्व के भी धनी थे। उन्होंने उसके आधार पर चतुर्विध धर्मसंघ की नेटवर्किंग की। उन्होंने अनेक विलक्षण कार्य किए, उनमें एक कार्य था--महाश्रमण और महाश्रमणी पद की सर्जना। जीवन के अंतिम समय तक उनके पुरुषार्थ की लौ जलती रही। अपने पौरुष के द्वारा उन्होंने संघ को विकास के शिखरों पर चढ़ाया। वे मात्र स्वप्नदर्शी व्यक्तित्व ही नहीं थे, अपितु वे अपने सपनों को पूरा करना भी जानते थे। अपने संकल्प और पुरुषार्थ के द्वारा उन्होंने अपने सपनों को पूरा किया। उनकी चिन्तनशीलता और सृजनशीलता भी अद्भुत थी। उन्होंने साहित्य, शिक्षा, शोध आदि अनेक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण अवदान दिए। आज के दिन मैं आचार्यश्री तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।'

आचार्यश्री तुलसी ने भारत देश की यात्रा की और आचार्यश्री महाश्रमणजी ने तो विदेश की भी यात्रा कर ली। मुझे ऐसा लगता है कि आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की अद्भुत शक्ति किसी न किसी रूप में आचार्यश्री महाश्रमणजी के साथ कार्य कर रही है, इसी कारण इतनी लम्बी-लम्बी पदयात्राएं संभव हो पा रही हैं। हम अनुभव करते हैं कि आचार्यश्री तुलसी के जीवन की भांति आचार्यश्री महाश्रमणजी का जीवन भी अद्भुत है। आपके सान्निध्य में यह धर्मसंघ निरंतर विकास करता रहे।'

फादर पोपइया ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'आज अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी को यहां देखकर मैं बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। महापुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी के आने से आज यहां उत्सव जैसा माहौल हो गया है। मैं अपनी ओर से व गिरिजाघर के सदस्यों की ओर आपश्री का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। बदलते परिवेश में आपकी यह अहिंसा यात्रा जन-जन को शुभ संदेश दे रही

है। मैं आपकी यात्रा की मंगलकामना करता हूं और आप लोगों का एक बार पुनः बहुत-बहुत स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनिकुमारश्रमणजी ने पूज्यप्रवर के तमिनाडु प्रवेश के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण दिवस के संदर्भ में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा रचित गीत को प्रस्तुति दी। संसारपक्ष में तमिलनाडु से संबंधित साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी ने अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। संसारपक्ष में तमिलनाडु से संबद्ध साध्वीवृंद, समणीवृंद और मुमुक्षुवृंद ने अपने आराध्य के स्वागत में गीत का संगान किया। चेन्नई प्रवास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री प्यारेलाल पितलिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। चेन्नई तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने स्वागत गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र बोहरा ने पूज्यप्रवर के समक्ष साध्वी भाग्यवतीजी (श्रीडूंगरगढ़) द्वारा लिखित साध्वी लिखमावतीजी की जीवन 'प्रकाशमयी अमिट ज्योति' तथा साध्वी रमाकुमारीजी द्वारा लिखित मुक्तकों की पुस्तक 'वीणा के स्वर' लोकार्पित कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जहां कामना, वहां दुःख

२ जुलाई। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः आरम्बकम् से गुम्मिडीपूण्डी की ओर प्रस्थान किया। आज का विहार प्रलम्ब था और अपने उदयकाल के कुछ ही समय पश्चात् सूरज आतप बरसाने लगा। पूज्यप्रवर ने कुछ ही किलोमीटर की दूरी तय की थी कि आसमान में बादल उमड़ आए और उन्होंने सूर्य किरणों को बाधित कर दिया। इस कारण मौसम सुहावना बन गया।

'पेरिय पन्नगाड' नामक गांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग में एक घर के बाहर एक परिवार ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। परिवार के लोगों ने पूज्यप्रवर को अपने घर में पधारने की प्रार्थना की। उनके साथ एक छहदिवसीय बच्ची को भी पूज्यप्रवर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। मार्ग में 'पुलिकट' नामक झील के एक छोर पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। बताया गया कि यह झील करीब ६० किलोमीटर तक फैली हुई है। 'श्रीहरिकोटा' इस झील को बंगाल की खाड़ी से पृथक् पहचान बनाए हुए है। पूज्यप्रवर लगभग १४.२ कि.मी का विहार कर गुम्मिडीपूण्डी में स्थित महाराणा अग्रसेन मेट्रिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

विद्यालय के ऑनर श्री सुशील सर्राफ ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। विद्यालय के द्वार से पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष के निकट तक कतारबद्ध और करबद्ध खड़े शिक्षकों और विद्यार्थियों ने पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जहां लालसा होती है, कामना होती है, वहां दुःख को पैदा होने का मौका मिल सकता है। अर्थात् दुःख का उत्पत्ति स्थान कामना होती है। आदमी को लालसा, कामना को कम करने का प्रयास करना चाहिए। सोने (स्वर्ण) का पर्वत भी मिल जाए तो भी लोभी आदमी को संतोष नहीं मिलता।

यदि कामना पूरी हो जाती है तो वह और बढ़ सकती है और वह पूरी नहीं होती तो मन में गुस्सा, दुःख पैदा हो सकता है। जैन वाङ्मय में इच्छा परिमाण की बात कही गई कि इच्छाओं का परिसिमन करो। जो संतोष प्रधान जीवन जीता है, वह पूज्य बन जाता है। जिसने इच्छाओं का संयम कर लिया, वह बहुत सुखी रह सकता है।

नौकर मालिक पर हावी हो जाए तो कठिनाई हो सकती है। मन नौकर है और आत्मा मालिक है। आत्मारूपी मालिक पर मनरूपी नौकर हावी न हो, यह ध्यातव्य है। इसलिए आदमी को मन के कहे-कहे नहीं

चलना चाहिए। इच्छाओं का कहीं अंत नहीं होता। इस इच्छा के दावानल में आदमी के सुख का उपवन जल जाता है। इच्छाओं का संयम भी साधना है।'

स्थानीय जैन समाज की ओर से श्री महावीर सांखला ने कहा--'हमारा यह सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज हमारे गांव को पावन कर दिया। मैं आपका बहुत-बहुत स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

विद्यालय के ऑनर श्री सुशील सर्राफ ने कहा--'आज हमारे स्कूल का भाग्य खुल गया कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के रूप में एक महापुरुष का यहां पदार्पण हुआ है। मैं आचार्यश्री के चरणों में प्रणाम अर्पित करता हुआ उनका सादर स्वागत करता हूं।'

पूज्यप्रवर ने विद्यालय के ऑनर श्री कृष्णा सर्राफ तथा उनके पुत्र श्री सुशील सर्राफ को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ सत्संस्कारों का भी विकास हो। गुम्मिडीपूण्डी में सोलह जैन परिवार प्रवासित हैं। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित जैन समाज के लोगों को सामायिक आदि की प्रेरणा प्रदान की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम के दौरान मिंजूर के निर्धारित एकदिवसीय प्रवास में एक दिन की अभिवृद्धि करते हुए वहां दो दिवसीय प्रवास करने की घोषणा की। उसके लिए आज सायंकाल का विहार निर्धारित किया गया। विहार के निर्धारित समय से कुछ पूर्व आसमान में बादल उमड़ आए और तेज हवा के साथ तीव्र वर्षा प्रारम्भ हो गई, जो काफी समय तक जारी रही। पूज्यप्रवर ने चिन्तनपूर्वक आज का सायंकालीन विहार का कार्यक्रम निरस्त कर दिया। कुछ समय पश्चात् वर्षा भी थम गई। वर्षा के कारण वातावरण में अच्छी शीतलता व्याप गई। रात्रि में करीब सवा बजे पुनः रिमझिम वर्षा प्रारम्भ हो गई, जो प्रायः सूर्योदय के बाद तक मंद रूप में जारी रही। वर्षा के बाद बहने वाली हवा के कारण रात्रि में सर्दी का-सा अहसास होने लगा।

तमिलनाडु के राज्यपाल श्री बनवारीलाल पुरोहित का भावपूर्ण पत्र

२ जुलाई को तमिलनाडु के राज्यपाल श्री बनवारी लाल पुरोहित ने अपने एक पत्र के माध्यम से पूज्यप्रवर के प्रति अपने भावोद्गार व्यक्त किए, जो इस प्रकार है--

पूज्य संत, योगी, लेखक, वक्ता, और कवि आदि बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व रखने वाले, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के ग्यारहवें संत आचार्य महाश्रमण एक धर्म निरपेक्ष महानुभाव हैं।

आपका व्यक्तित्व प्रथम दृष्टि से ही सबको आकर्षित करने वाला है। लोक कल्याण को ही अपना एकमात्र उद्देश्य मानकर उसी दिशा में आप कार्यरत हैं।

नैतिकता, नशामुक्ति एवं सद्भावना और अहिंसा आदि का शुभ संदेश देने वाली आपकी इस पदयात्रा की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं।

बनवारीलाल पुरोहित
राज्यपाल, तमिलनाडु राज्य

सबको संतुष्ट करेंगे

२७ जून। आज मध्याह्न में साध्वीप्रमुखाजी आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थीं। वार्तालाप के दौरान पूज्यप्रवर द्वारा आगामी २७ जुलाई को पूज्यप्रवर द्वारा होने वाली सन् २०२१ की घोषणा का प्रसंग चला। साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'गुरुदेव! सन् २०२१ के चतुर्मास तो एक है और याचक अनेक हैं। जैसे एक राजा अनेकों गांवों और लाखों लोगों को संतुष्ट रखता है, वैसे ही आचार्यप्रवर चतुर्मास के याचक सभी क्षेत्रों को संतुष्ट करवाएंगे।'

साध्वीवर्याजी ने साध्वीप्रमुखाजी से पूछा--'घोषणा तो एक क्षेत्र की होगी, फिर आचार्यप्रवर सबको संतुष्ट कैसे करेंगे?'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

साध्वीप्रमुखाजी--'यही तो हमारे धर्मसंघ के आचार्यों की कला है। आचार्यप्रवर किसी क्षेत्र को आश्वासन प्रदान कर तो किसी क्षेत्र की घोषणा कर संतुष्ट करेंगे।

आंखें वर्षों से तरस रही थीं

२२ जून। २२ जून को चेन्नई के मूर्तिपूजक समाज का संभवतः 'हुकम जैन' नामक एक व्यक्ति अपनी मां के साथ पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचा। वह भावविभोर स्वर में बोला--'आचार्यश्री! मैंने आपका नाम बहुत सुना है। बस, आपको देखने की मेरी बहुत इच्छा थी। आपके दर्शन के लिए मेरी आंखें वर्षों से तरस रही थी। हालांकि आप चेन्नई पधार रहे हैं, पर मेरे से रहा नहीं गया तो आज मैं आपके दर्शन करने और आपसे आशीर्वाद लेने आ गया। पूज्यप्रवर ने उसे पावन आशीष प्रदान की।

शासन समुद्र : एक सूचना

परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के शासनकाल में दीक्षित साधु-साध्वियों के विवरण से युक्त 'शासन-समुद्र' पुस्तक का निर्माण कार्य जारी है। इस पुस्तक में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के युग में दीक्षित साधु-साध्वियों को ३१ मार्च २०१८ तक विवरण समाविष्ट करने की योजना है। चूंकि पूर्व में संभवतः जुलाई २०१४ का विवरण प्राप्त हो चुका है, इसलिए आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के युग के साधु-साध्वियों के १ अगस्त २०१४ से ३१ मार्च २०१८ तक के उनके विवरण उनसे प्राप्त कर उनके चातुर्मासिक क्षेत्र की तेरापंथी सभाएं भिजवाएं, ऐसी अपेक्षा है। विवरण के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं--शिक्षा (कंठस्थ, वाचन, विश्वविद्यालयी अध्ययन, संघीय पाठ्यक्रम से अध्ययन), सान्निध्य, साहित्य रचना, साधना, सेवा, यात्रा, चतुर्मास तालिका, तपस्या, संस्मरण, प्रेरक संदेश, बख्शीश, कला, विविध विशेष। यह विवरण १५ अगस्त २०१८ तक ईमेल-jainvishvabharati@yahoo.com पर अथवा अग्रांकित पते पर प्राप्त हो जाए, ऐसी अपेक्षा है--जैन विश्व भारती, लाडनूं, राजस्थान, ३४१३०६। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए स्थानीय तेरापंथ सभा के अधिकृत व्यक्ति के मो. नं. ९७७२५६१८६६ पर संपर्क कर सकते हैं। यथासंभव समय सीमा का अतिक्रमण न हो।

नवीन घोषित चतुर्मास व समणीकेन्द्र

मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन'	ग्रीनपार्क, दिल्ली
मुनिश्री विजयराजजी	जैन विश्व भारती, लाडनूं
साध्वी भाग्यवतीजी 'श्रीडूंगरगढ़'	बरवाला, हरियाणा
साध्वी उज्ज्वलरेखाजी	कालू
साध्वी राजीमतीजी	नोखामण्डी
साध्वी चन्द्रकलाजी, साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी जगत्प्रभाजी	कटला, रामलीला हिसार
साध्वी मैणरयाजी	लालकोठी, बीकानेर
समणी जिनप्रज्ञाजी	सिलचर (समणीकेन्द्र)

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला